तुरंत रिलीज़ करने के लिए
मीडिया संपर्क: Anna Schiller, (+1) 202-419-4514, aschiller@pewresearch.org

परिवारों और समाज में लैंगिक भूमिकाओं को भारतीय किस प्रकार देखते हैं
भारतीय महिलाओं को राजनैतिक नेत्री के रूप में स्वीकार करते हैं लेकिन कई लोग पारिवारिक जीवन में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएं ही पसंद करते हैं

वाशिंगटन, डी.सी. (मार्च 2, 2022) - आज से पचास वर्ष से भी पहले, भारत उन प्रथम देशों में से था जिसने प्रधान-मंत्री के रूप में महिला को चुना था, और वर्तमान समय में देश में कई प्रभावशाली महिला राजनैतिक नेत्रियाँ हैं, जिनमें से एक हैं सोनिया गाँधी जो प्रमुख राष्ट्रीय दलों में से एक की अध्यक्ष हैं। आज, बहुत से भारतीय कहते हैं कि "सामान्यत:, महिलाएं और पुरुष समान रुप से अच्छे राजनेता होते हैं," और हाल ही में Pew शोध केंद्र द्वारा पूरे भारत में लगभग 30,000 वयस्कों के सर्वेक्षण के अनुसार दस-में-से-एक से ज्यादा लोगों को लगता है कि आमतौर पर महिलाएं पुरुषों की तुलना में *बेहतर* राजनेता बनती हैं। केवल एक-चौथाई भारतीय वयस्कों का मानना है कि महिलाओं की तुलना में पुरुष बेहतर राजनेता बनते हैं।

लेकिन घरेलू परिस्थितियों में, भारतीय लोगों का कहना है कि महिलाओं की तुलना में पुरुषों की ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। करीब दस-में-से-नौ भारतीय इस धारणा को मानते हैं कि पत्नी को हमेशा अपने पति की आज्ञा का पालन करना चाहिए, जिनमें से लगभग दो-तिहाई लोग ऐसे हैं जो इस मत से *पूर्ण रूप* से सहमत हैं। 2019 के अंत और 2020 की शुरुआत में (अधिकतर कोविड-19 महामारी के शुरू होने से पहले) आयोजित एक सर्वेक्षण के अनुसार भारतीय पुरुषों से बस थोड़ी ही कम प्रतिशत भारतीय महिलाएं (67% पुरुष बनाम 61% महिलाएं) इस बात से पूर्ण रूप से सहमत हैं कि पत्नी को हमेशा अपने पति की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

फिर भी, कई भारतीय घरों में लैंगिक भूमिकाओं के संबंध में समानता का दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं। जैसे कि, 62% वयस्कों का कहना है कि पुरुष और महिला, दोनों पर बच्चों की देखभाल करने की जिम्मेदारी होनी चाहिए। लेकिन आबादी के काफी बड़े हिस्से में आज भी पारंपरिक लैंगिक मानदंड हावी हैं: प्रायः एक-तिहाई वयस्कों (34%) को लगता है कि बच्चों की देखभाल मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा की जानी चाहिए।

उसी प्रकार, पचास प्रतिशत से कुछ ही ज्यादा (54%) का कहना है कि परिवारों में पुरुषों और महिलाओं, दोनों पर पैसा कमाने की जिम्मेदारी होनी चाहिए, लेकिन कई भारतीय (43%) इसे मुख्य रूप से पुरुषों की जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं। और अधिकतर भारतीय वयस्क कहते हैं कि जब नौकरी कम हों, तो पुरुषों को महिलाओं की तुलना में रोजगार के अधिक अधिकार होने चाहिए, जो कि आर्थिक क्षेत्र में पुरुषों के निरंतर प्राधान्य को दर्शाता है। दस-में-से-आठ लोग इस मत से सहमत हैं, जिसमें अधिकांश लोग (56%) ऐसे हैं जो पूर्ण रूप से इस बात को मानते हैं।

भारतीयों के लिए परिवार में बेटे और बेटियों, दोनो का महत्व है। लगभग सभी भारतीय कहते हैं कि जरूरी है कि परिवार में कम से कम एक बेटा (94%) होना ही चाहिए और इसके अलावा कम से कम एक बेटी (90%) होनी चाहिए। और अधिकांश भारतीयों का कहना है कि बेटे और बेटियों दोनों को माता-पिता से मिली विरासत पर समान अधिकार होना चाहिए (64%) और माता-पिता के बूढ़े होने पर उनकी देखभाल की जिम्मेदारी भी दोनों पर समान रूप से होनी चाहिए (58%)। लेकिन दोनों ही मामलों में अधिकतर लोगो कहते हैं कि इन क्षेत्रों में बेटियों के बजाय बेटों को अधिक

अधिकार और जिम्मेदारियां दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, जहां पर लगभग दस-में-से-चार भारतीय वयस्कों का कहना है कि बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने की प्रमुख जिम्मेदारी बेटों की होनी चाहिए, बेटियों पर इस जिम्मेदारी के होने के बारे में सिर्फ 2% ऐसा कहते हैं। इसके अलावा, अधिकांश भारतीय (63%) बेटियों के बजाय बेटों को मुख्य रूप से माता-पिता के अंतिम संस्कार और दफनाने की रस्म निभाने का जिम्मेदार मानते हैं।

विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक कारणों से, भारतीय परिवारो में बेटियों के बजाय बेटों को अधिक महत्व दिया जाता है - एक ऐसी प्रथा जिसे मोटे तौर पर "पुत्र अधिमानता" कहा जाता है। लिंग चयनात्मक गर्भपात कराने की प्रथा की अवैधता के बावजूद, पुत्र अधिमानता और हाल के दशकों में अल्ट्रासाउंड की बढ़ती उपलब्धता ने भारत में कन्या भ्रूण हत्या की प्रथा को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। कई भारतीय कम से कम कुछ परिस्थितियों में लिंग के आधार पर गर्भपात को स्वीकार्य मानते हैं: दस-में-से-चार भारतीयों का कहना है कि "परिवार में लड़कियों और लड़कों की संख्या को संतुलित करने के लिए आधुनिक तरीकों को इस्तेमाल करते हुए जांच करना" या तो "पूरी तरह से स्वीकार्य" या " थोड़ा बहुत स्वीकार्य" है, जो कि बस लिंग के आधार पर गर्भपात करने का बहाना है। लगभग इतने ही लोग (42%) कहते हैं कि आधुनिक तरीकों के माध्यम से एक परिवार में लड़कियों और लड़कों की संख्या को संतुलित करना पूरी तरह से अस्वीकार्य है, जबकि लगभग दस-में-से-एक इस प्रथा को " थोड़ा बहुत" अस्वीकार्य बताते हैं।

इस सवाल पर और इस रिपोर्ट में शामिल अन्य सभी विषयों पर, पुरुषों और महिलाओं के बीच और सभी आयु समूहों के बीच मतभेद मामूली हैं। दूसरे शब्दों में, भारतीय पुरुषों की तुलना में भारतीय महिलाएं द्वारा पुत्र अधिमानता और लिंग भूमिकाओं पर समानता का विचार व्यक्त करने की अधिक संभावना नहीं होती है, और यही बात बुज़ुर्गों की तुलना में युवा भारतीय वयस्कों (18 से 34 वर्ष की आयु) के बारे में भी सच है।

Pew शोध केंद्र द्वारा 29,999 भारतीय वयस्कों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर आमने-सामने किए गए सर्वेक्षण पर आधारित यह दूसरी रिपोर्ट है। भारत में सर्वेक्षण के कई निष्कर्ष पहले "भारत में धर्म: सहिष्णुता और अलगाव," में प्रकाशित हुए थे, जिसमें धार्मिक और राष्ट्रीय पहचान, धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं एवं विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच दृष्टिकोण पर बारीकी से देखा गया था। सर्वेक्षण में भारतीय समाज में लैंगिक भूमिकाओं पर कई प्रश्न शामिल थे, लेकिन पिछली रिपोर्ट में इन प्रश्नों की समीक्षा नहीं की गई थी और अब यह पहली बार प्रकाशित किए जा रहे हैं। (हाल ही में एक और रिपोर्ट, "भारत की धार्मिक संरचना," में स्वतंत्रता के बाद भारत की धार्मिक संरचना में आए बदलाव की समीक्षा की गई थी।)

स्थानीय साक्षातकर्ताओं ने 17 भाषाओं में नवम्बर 17, 2019 से लेकर 23 मार्च, 2020 तक यह सर्वेक्षण किया। मणिपुर और सिक्किम को छोड़कर भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सर्वेक्षण किया गया - मणिपुर और सिक्किम में तेजी से फैल रही कोविड-19 की स्थिति के कारण 2020 के वसंत में फील्डवर्क रुक गया - और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप के दूरदराज के क्षेत्र में भी सर्वेक्षण नहीं किया गया; इन क्षेत्रों में भारतीय आबादी के 1% का लगभग एक चौथाई हिस्सा रहता है। केंद्र शासित प्रदेश - जम्मू और कश्मीर को सर्वेक्षण में शामिल किया गया था, हालांकि सुरक्षा संबंधी कारणों से कश्मीर क्षेत्र में कोई फील्डवर्क नहीं किया गया था।

Pew चैरिटेबल ट्रस्ट्स और जॉन टेम्पलटन फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित यह अध्ययन धार्मिक बदलाव और दुनिया भर में समाजों पर इसके प्रभाव को समझने के लिए Pew शोध केंद्र के एक बडे प्रयास का हिस्सा है।

इस पूर्ण रिपोर्ट में निम्नलिखित विषय शामिल किए गए हैं: लैंगिक भेदभाव संबंधी धारणाएं; विश्व की तुलना में भारतीय दृष्टिकोण कितना भिन्न है; लिंग के संबंध में दृष्टिकोण पर शिक्षा और धर्म का प्रबल प्रभाव; भारतीय पुरुषों और महिलाओं के बीच और विभिन्न उम्र के वयस्कों के बीच लिंग के संबंध में दृष्टिकोण में न्यूनतम अंतर; और क्षेत्रीय एवं राज्य के स्तर पर लैंगिक-भूमिकाओं को कैसे देखा जाता है।

अंग्रेज़ी में रिपोर्ट पढ़ने के लिए, यहां जाएं: https://www.pewforum.org/2022/03/02/how-indians-view-gender-roles-in-families-and-society

कार्य-विधि (in English): https://www.pewforum.org/2022/03/02/methodology-47

सर्वेक्षण की रूपरेखा (in English): https://www.pewforum.org/wp-content/uploads/sites/7/2022/02/PF_03.02.22_India_Gender_Topline.pdf

अध्ययन के बारे में और जानने के लिए या प्रमुख शोधकर्ताओं, रिसर्च असोसिएट जोनाथन इवांस और असोसिएट डायरेक्टर ऑफ रिसर्च नेहा सहगल, के साथ एक साक्षात्कार की व्यवस्था करने के लिए, कृपया अन्ना शिलर से aschiller@pewresearch.org या +1-202-419-4514 पर संपर्क करें।

###

Pew शोध केंद्र एक ऐसा अपक्षपाती तथ्य समूह है जो दुनिया को आकार देने वाले मुद्दों, दृष्टिकोणों और रुझानों के बारे में जनता को सूचित करता है। यह नीतियों के संदर्भ में कोई पक्ष नहीं निभाता है। यह केंद्र Pew चैरिटेबल ट्रस्ट्स की सहायक कंपनी है, जो इसका प्राथमिक वित्त पोषक है। हमारे दैनिक और साप्ताहिक ईमेल न्यूज़लेटर की सदस्यता लें।

इस प्रेस-विज्ञप्ति का इसके मूल अंग्रेज़ी संस्करण से हिंदी में अनुवाद किया गया है।